विद्या भारती पूर्वी उ०प्र० Contact-9415888806

सरस्वतीकुञ्ज, निरालानगर, लखनऊ

E-mail-vidyabhartipurviup@gmail.com

Website-vbeastup.org

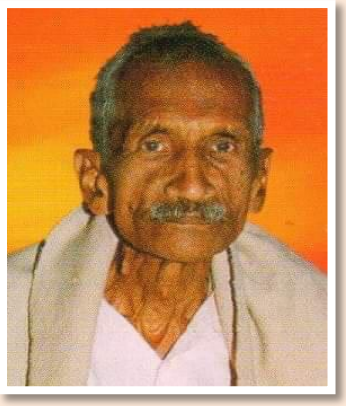

रघुवर प्रसाद जायसवाल सरस्वती शिशु मंदिर इण्टर कालेज, सिद्धार्थनगर में कक्षा वर्ग के अनुसार, **24 नवम्बर, पुण्य तिथि पर शिशु मंदिर योजना के जनक स्व.श्री कृष्णचन्द्र गांधी का पुण्य स्मरण करते हुए व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला गया।**

"वेश से तो नहीं, पर मन, वचन और कर्म से साधु स्वभाव के श्री कृष्णचंद्र गांधी का जन्म विजयादशमी, 1921 को मेरठ में श्री मुरारीलाल मित्तल के घर में हुआ था। छात्रावस्था में वे सर्दियों में भी नहाकर केवल धोती पहनकर ध्यान करते थे। यह सादगी देखकर लोग उन्हें "गांधी जी" कहने लगे। तब से उनका यही नाम प्रचलित हो गया। उन्होंने कभी मोजा, पाजामा, स्वेटर आदि नहीं पहना। घोर सर्दी में वे एक शॉल निकाल लेते थे।

1943 में वे स्वयंसेवक बने। सुगठित शरीर होने के कारण शाखा के शारीरिक कार्यक्रम उन्हें बहुत भाते थे। संघ में घोष के साथ ही उन्हें घुड़सवारी व तैराकी भी बहुत प्रिय थी। 1944 में बी.ए. करने के बाद वे प्रचारक बन गये। अल्पव्ययी गांधी जी ने कभी तेल व नहाने का साबुन प्रयोग नहीं किया। कभी अंग्रेजी दवा नहीं ली तथा कभी निजी अस्पताल में भर्ती नहीं हुए। उन्होंने कभी चश्मा नहीं लगाया तथा अंतिम समय तक उनके दांत भी सुरक्षित थे। जीवन के अंतिम कुछ दिन छोड़कर उन्होंने किसी से अपनी सेवा भी नहीं कराई।

1945 में गांधी जी मथुरा में जिला प्रचारक थे। वहां वे बाढ़ के दिनों में उफनती यमुना को तैरकर पार करते थे। अनेक स्वयंसेवकों को भी उन्होंने इसके लिए तैयार किया। मथुरा का संघ कार्यालय (कंस किला) पहले एक बड़ा टीला था। उसे खरीदकर खुदाई कराई, तो नीचे सचमुच किला ही निकल आया। अब उसे 'केशव दुर्ग' कहते हैं।

श्रम और श्रमिकों के प्रति अतिशय प्रेम, आदर व करुणा के कारण वे कभी रिक्शा पर नहीं बैठे। यदि किसी के साथ साइकिल पर जाना हो, तो वे स्वयं ही साइकिल चलाते थे। वे कहते थे कि मानव की सवारी तो तब ही करूंगा, जब चार लोग मुझे शमशान ले जाएंगे।

1952 में गांधी जी गोरखपुर में विभाग प्रचारक थे। उन दिनों नाना जी देशमुख भी वहीं थे। इन दोनों ने प्रांत प्रचारक भाऊराव देवरस के आशीर्वाद से वहां पहला सरस्वती शिशु मंदिर खोला। आज वह बीज वटवृक्ष बन चुका है, जिसकी देश में 50,000 से भी अधिक शाखाएं हैं। इसके बाद भाऊराव ने उन्हें इसके विस्तार का काम सौंप दिया।

फिर तो गांधी जी और शिशु मंदिर एकरूप हो गये। लखनऊ में सरस्वतीकुंज, निराला नगर तथा मथुरा में शिशु मंदिर प्रकाशन उन्हीं की देन हैं। इतना करने के बाद भी वे कहते, ''व्यक्ति कुछ नहीं है। ईश्वर की प्रेरणा से यह सब संघ ने किया है।'' वे सदा गोदुग्ध का ही प्रयोग करते थे। लखनऊ में उनकी प्रिय गाय उनके लिए किसी भी समय दूध दे देती थी। यही नहीं, उनके बाहर जाने पर वह दूध देना बंद कर देती थी।

उत्तर प्रदेश के बाद उन्हें पूर्वोत्तर भारत में भेजा गया। हाफलांग में उन्होंने नौ जनजातियों के 10 बच्चों का एक छात्रावास प्रारम्भ किया, जो अब उधर के सम्पूर्ण काम का केन्द्र बना है। रांची के 'सांदीपनि आश्रम' में रहकर उन्होंने वनवासी शिक्षा का पूरा स्वरूप तैयार किया तथा प्राची जनजाति सेवा न्यास, मथुरा के माध्यम से उसके लिए धन का प्रबंध भी किया।

स्वास्थ्य काफी ढल जाने पर उन्होंने मथुरा में ही रहना पसंद किया। जब उन्हें लगा कि अब यह शरीर लम्बे समय तक शेष नहीं रहेगा, तो उन्होंने एक बार फिर पूर्वोत्तर भारत का प्रवास किया। वहां वे सब कार्यकर्ताओं से मिलकर अंतिम रूप से विदा लेकर आये। इसके बाद उनका स्वास्थ्य लगातार गिरता गया। यह देखकर उन्होंने भोजन, दूध और जल लेना बंद कर दिया। शरीरांत से थोड़ी देर पूर्व उन्होंने श्री बांके बिहारी मंदिर का प्रसाद ग्रहण किया था।

24 नवम्बर, 2002 को सरस्वती शिशु मंदिर योजना के जनक श्री कृष्ण चंद्र गांधी ने मथुरा में ही अपनी देह श्रीकृष्णार्पण कर दी।